ख़ानदानी झगड़ों
के असबाब और उनका हल
3
जस्टिस मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद तक़ी साहिब उस्मानी

ख़ानदानी झगड़ों

के असबाब और उनका हल

(तीसरा हिस्सा)

ख़िताब

जस्टिस मौलाना मुफ़्ती
मुहम्मद तक़ी साहिब उस्मानी

अनुवादक

मु० इमरान क़ासमी एम०ए० (अलीग)

प्रकाशक

फ़रीद बुक डिपो प्रा० लि०

422, मटिया महल, ऊर्दू मार्किट, जामा मस्जिद देहली 6
फ़ोन आफ़िस 3289786,3289159 आवास 3262486

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

नाम किताब	**ख़ानदानी झगड़ों के असबाब और उनका हल (तीसरा हिस्सा)**
ख़िताब	मौलाना मु० तक़ी उस्मानी
अनुवादक	मुहम्मद इमरान क़ासमी
संयोजक	मुहम्मद नासिर ख़ान
तायदाद	1100
प्रकाशन वर्ष	जून 2002
कम्पोज़िंग	इमरान कम्प्यूटर्स मुज़फ़्फ़र नगर (0131-442408)

>>>>>>>>>>>

प्रकाशक

फ़रीद बुक डिपो प्रा० लि०

422, मटिया महल, ऊर्दू मार्किट, जामा मस्जिद देहली 6

फ़ोन आफ़िस 3289786,3289159 आवास 3262486

फ़ेहरिस्ते मज़ामीन

ख़ानदानी झगड़ों के असबाब और उनका हल

(तीसरा हिस्सा)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنَّ سَيِّدَنَا وَسَنَدَنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَ اَصْحَابِهٖ وَبَارَكَ وَسَلَّمَ تَسْلِيْمًا كَثِيْرًا كَثِيْرًا، اَمَّا بَعْدُ:

عن ابی موسیٰ رضی اللّٰہ تعالیٰ عنہ عن النبی صلی اللّٰہ علیہ وسلم قال: ما أحد اصبر علی اذیً سمعه من اللّٰه يدعون له الولد ثم يعافيهم ويرزقهم۔ (بخاری شریف)

दूसरों से पहुंचने वाली तक्लीफ़ों पर सब्र

पिछले इतवार को एक हदीस पढ़ी थी, जिसकी तशरीह में मैंने अ़र्ज़ किया था कि मुसलमानों के दरमियान अपस में झगड़े और इख़्तिलाफ़ात और बुग़्ज़ व दुश्मनी यह एक बहुत बड़ी दीनी और समाजी बीमारी है, और हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इस बीमारी से बचाने के

लिए और मुसलमानों के दरमियान मुहब्बत और भाईचारा क़ायम करने के लिए बहुत सी हिदायतें अ़ता फ़रमाई हैं, उन हिदायतों में से एक हिदायत पिछले बयान में अ़र्ज़ की थी कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमायाः जो शख़्स दूसरों के साथ मिलाजुला रहता है और फिर लोगों से पहुंचने वाली तक्लीफ़ों पर सब्र करता है तो वह शख़्स उस से कहीं बेहतर है जो लोगों के साथ मेलजोल नहीं रखता और जिसके नतीजे में लोगों से पहुंचने वाली तक्लीफ़ों पर सब्र करने की नौबत नहीं आती। इस से मालूम हुआ कि आपस के इख़्तिलाफ़ और नाचाक़ी का बहुत बड़ा सबब यह होता है कि दूसरों से पहुंचने वाली तक्लीफ़ों पर सब्र न किया जाए, साथ रहने के नतीजे में दूसरे से कभी न कभी कोई तक्लीफ़ ज़रूर पहुंचेगी, लेकिन उस तक्लीफ़ पर इन्सान को सब्र करना चाहिए।

सब से ज़्यादा सब्र करने वाली ज़ात

इसी हिदायत के तौर पर हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने वह हदीस इर्शाद फ़रमाई जो अभी मैंने आपके सामने तिलावत की, जिसका ख़ुलासा यह है कि हज़रत अबू मूसा अश्अ़री रज़ियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत है कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि इस कायनात में कोई भी ज़ात दूसरे से पहुंचने वाली तक्लीफ़ पर इतना सब्र करने वाली नहीं जितनी अल्लाह तआ़ला की ज़ात सब्र करने वाली है। लोग अल्लाह तआ़ला को ऐसी बातें कहते हैं जो तक्लीफ़ पहुंचाने का

ज़रिया होती हैं। चुनांचे लोग अल्लाह तआ़ला के लिए बेटा मानते हैं जैसे ईसाई कहते हैं कि हज़रत ईसा अ़लै. अल्लाह तआ़ला के बेटे हैं। अल्लाह की पनाह। बाज़ यहूदियों ने हज़रत उज़ैर अ़लैहिस्सलाम को अल्लाह का बेटा बना दिया। बाज़ मुश्रिकों ने फ़रिश्तों को अल्लाह तआ़ला की बेटियां क़रार दे दिया। बहुत से लोगों ने पत्थरों को, पेड़ों को, यहां तक कि जानवरों को, गाय बैल को, सांप बिच्छू को ख़ुदा मानना शुरू कर दिया। जिस ज़ात ने इन सब इन्सानों को पैदा किया और फ़रिश्तों को यह बता कर पैदा किया कि मैं इन्सान को ज़मीन में अपना ख़लीफ़ा बना रहा हूं, वही इन्सान अल्लाह तआ़ला के साथ दूसरों को शरीक ठहरा रहे हैं।

अल्लाह तआ़ला की बुर्दबारी देखिए

ये इन्सान अल्लाह तआ़ला को तक्लीफ़ पहुंचाने वाले काम कर रहे हैं, लेकिन अल्लाह तआ़ला की बुर्दबारी देखिए कि ये सब बातें सुनते हैं, इसके बावजूद इन इन्सानों को सुकून व आ़फ़ियत भी दे रखी है और उनको रिज़्क़ भी दे रखा है। इस कायनात में आप देखें तो यह नज़र आयेगा कि काफ़िरों और मुश्रिकों की तादाद ज़्यादा है, और हमेशा इनकी तादाद ज़्यादा रही है, और कुरआने करीम ने भी कह दिया कि:

وَاِنْ تُطِعْ اَكْثَرَ مَنْ فِى الْاَرْضِ يُضِلُّوْكَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ (الانعام:آيت١١٦)

यानी अगर आप ज़मीन में रहने वालों की अक्सरियत के पीछे चलेंगे तो वह आपको अल्लाह के रास्ते से भटका

देगी।

इसलिए कि इन्सानों की अक्सरियत तो कुफ़्र में शिर्क में और बुराई में मुब्तला है।

लोकतंत्र का फ़ल्सफ़ा मानने का नतीजा

आजकल दुनिया में "जम्हूरियत" (यानी लोकतंत्र) का शोर मचाया जा रहा है, और यह कहा जा रहा है कि अक्सरियत जो बात कह दे वह हक़ है। अगर यह उसूल तस्लीम कर लिया जाए तो इसका मतलब यह निकलेगा कि "कुफ़्र" बरहक़ है, और "इस्लाम" बातिल है। अल्लाह अपनी पनाह में रखे। इसलिए कि रूए ज़मीन में बसने वाले इन्सानों की अक्सरियत या तो कुफ़्र में मुब्तला है या शिर्क में मुब्तला है, और जो लोग मुसलमान कहलाते हैं, अल्लाह तआ़ला के एक होने के क़ायल हैं, हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की रसूल होने पर ईमान रखते हैं, आख़िरत पर ईमान रखते हैं, उनमें भी आप देखें तो यह नज़र आयेगा कि ठीक ठीक शरीअ़त के दायरे पर चलने वालों की तादाद बहुत थोड़ी है। और बेफ़िक्र, बेपरवाह और गुनाहों व बुराईयों के अन्दर मुब्तला और नाफ़रमानियों में गिरफ़्तार इन्सानों की तादाद बहुत ज़्यादा है।

काफ़िरों के साथ अच्छा सुलूक

इस रूए ज़मीन पर कुफ़्र भी हो रहा है, शिर्क भी हो रहा है, नाफ़रमानी भी हो रही है, गुनाह और बुराईयां भी हो रही हैं, लेकिन इन सब चीज़ों को देखने के बावजूद उन्हीं

लोगों को जो अल्लाह तआ़ला के वजूद तक का इन्कार कर रहे हैं, अल्लाह तआ़ला उनको रिज़्क़ अ़ता फ़रमा रहे हैं, उनको आ़फ़ियत दे रखी है और उन पर दुनिया में नेमतों की बारिश हो रही है। यह है अल्लाह तआ़ला का हिल्म और बुर्दबारी, अल्लाह तआ़ला से ज़्यादा कौन इन तक्लीफ़ों पर सब्र करने वाला होगा। शैख़ सादी रह्मतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाते हैं:

बर ख़्वाने यग़मा चे दुश्मन चे दोस्त

यानी अल्लाह तआ़ला ने इस दुनिया में रिज़्क़ का जो दस्तरख़्वान बिछाया हुआ है, उसमें दोस्त दुश्मन सब बराबर हैं, दोस्त को भी खिला रहे हैं, दुश्मन को भी खिला रहे हैं। बल्कि कभी कभी दुश्मन को ज़्यादा खिला रहे हैं। इस वक़्त आप काफ़िरों और मुश्रिकों को देखें तो यह नज़र आयेगा कि उनके पास दौलत के अंबार लगे हुए हैं, जब कि मुसलमानों पर कभी कभी फ़क्र व फ़ाक़ा भी गुज़र जाता है। अल्लाह तआ़ला उन सब की बातों को सुनने के बावजूद उनके साथ बुर्दबारी का मामला फ़रमा रहे हैं, उनको आ़फ़ियत और रिज़्क़ अ़ता फ़रमा रहे हैं।

अल्लाह तआ़ला के अख़्लाक़ अपने अन्दर पैदा करो

बहर हाल! अल्लाह तआ़ला के इस हिल्म और बुर्दबारी को देखिए और हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के इस इर्शाद पर अ़मल करें कि आपने फ़रमाया:

تَخَلَّقُوا بِاَخلاقِ اللّٰہِ۔

ऐ इन्सानो! तुम अल्लाह तआ़ला के अख़्लाक़ हासिल करने की और उनको अपनाने की कोशिश करो, अगरचे सौ फ़ीसद तो हासिल नहीं हो सकते, लेकिन इस बात की कोशिश करो कि वे अख़्लाक़ तुम्हारे अन्दर भी आ जाएं। जब अल्लाह तआ़ला लोगों के तक्लीफ़ पहुंचाने पर इतना सब्र फ़रमा रहे हैं तो ऐ अल्लाह के बन्दो! तुम भी लोगों के तक्लीफ़ पहुंचाने पर सब्र करो, और दूसरे से अगर तुम्हें तक्लीफ़ पहुंच रही है तो उसको बर्दाश्त करने की आ़दत डालो।

दुनिया में बदला न लो

अगर कोई यह सवाल करे कि अल्लाह तआ़ला दुनिया में सब्र फ़रमा रहे हैं और काफ़िरों और मुश्रिकों को आफ़ियत और रिज़्क़ दे रखा है। ये दुनिया में तरक़्क़ी कर रहे हैं, लेकिन जब आख़िरत में अल्लाह तआ़ला उनको पकड़ेंगे तो फिर छूट नहीं पायेंगे, और उनको ऐसा सख़्त अ़ज़ाब देंगे कि ये उस से बच नहीं सकेंगे। इसका जवाब यह है कि जब अल्लाह तआ़ला ने उनके साथ दुनिया में सब्र का मामला फ़रमाया है तो तुम भी यह मामला कर लो कि दुनिया में जिस शख़्स से तुम्हें तक्लीफ़ पहुंच रही है, उस से कह दो कि मैं तुम से बदला नहीं लेता और मैंने तुम्हारा मामला अल्लाह तआ़ला के हवाले कर दिया। आख़िरत में अल्लाह तआ़ला ख़ुद इन्साफ़ करा देंगे। इसलिए तुम अपना मामला अल्लाह के हवाले कर दो। इसलिए कि तुम दुनिया में उस तक्लीफ़ पर जो बदला लोगे

वह बदला उस इन्तिक़ाम के मुक़ाबले में कोई हैसियत नहीं रखता जो आख़िरत में अल्लाह तआ़ला लेंगे। इसलिए अगर तुम्हें बदला लेने का शौक़ है तो फिर यहां पर बदला न लो बल्कि अल्लाह तआ़ला पर छोड़ दो।

माफ़ करना बेहतर है

तुम्हारे लिए बेहतर तो यह है कि माफ़ ही कर दो, इसलिए कि जब तुम माफ़ कर दोगे तो अल्लाह तआ़ला ख़ुद ज़िम्मेदारी लेंगे और तुम्हारी ज़रूरतें पूरी फ़रमायेंगे और तुम्हें जो तक्लीफ़ें पहुंची हैं वह ख़त्म फ़रमायेंगे। चुनांचे अल्लाह के बन्दे माफ़ ही फ़रमा देते हैं। हमने अपने बुज़ुर्गों से हज़रत मियां जी नूर मुहम्मद साहिब रह्मतुल्लाहि अ़लैहि का वाक़िआ़ सुना जो हमारे दादा पीर हैं और हज़रत हाजी इमदादुल्लाह साहिब मुहाजिर मक्की रह्मतुल्लाहि अ़लैहि के शैख़ थे। उनकी आ़दत यह थी कि जब कोई शख़्स उनको तक्लीफ़ पहुंचाता तो फ़रमाते कि या अल्लाह! मैंने उसको माफ़ कर दिया, यहां तक कि अगर कोई चोर माल चोरी करके ले जाता तो आप फ़रमाते कि या अल्लाह! मैंने यह माल उसके लिए हलाल कर दिया, मैं उस से बदला लेकर और उसको अ़ज़ाब दिलवा कर क्या करूंगा। हर वक़्त अल्लाह के ज़िक्र में मश्ग़ूल रहते। जब बाज़ार में कोई चीज़ ख़रीदने जाते तो पैसों की थैली हाथ में होती, सामान ख़रीदने के बाद वह थैली दुकानदार को पकड़ा देते कि इस थैली में से इसकी क़ीमत ले ले, ख़ुद न गिनते। इसलिए कि जितना वक़्त निकाल कर गिनने में लगेगा

उतना वक़्त मैं ज़िक्र में मश्ग़ूल रहूंगा।

हज़रत मियां जी नूर मुहम्मद साहिब रह्मतुल्लाहि अ़लैहि का एक वाक़िआ

एक बार बाज़ार से गुज़र रहे थे, हाथ में पैसों की थैली थी, एक चोर को पता चल गया कि मयां साहिब के पास पैसों की थैली है, वह चोर पीछे से आया और थैली छीन कर भाग गया। मियां जी ने मुड़कर भी नहीं देखा कि कौन थैली छीन कर ले गाया। यह सोचा कि कौन उसके पीछे भागे और तहक़ीक़ करे कि कौन ले गया। बस ज़िक्र करते हुए अपने घर की तरफ़ चल दिए और दिल में यह नियत कर ली कि ऐ अल्लाह! जिस चोर ने ये पैसे लिए हैं, वे पैसे मैंने उसको माफ़ कर दिए और उसके लिए वे पैसे हिबा कर दिए। अब वह चोर चोरी करके मुसीबत में फंस गया, अपने घर की तरफ़ जाना चाहता है लेकिन उन गलियों से निकलने का रास्ता नहीं पाता। एक गली से दूसरी गली में, दूसरी से तीसरी गली में आ जाता, वे गलियां उसके लिए भूल भुलैयां बन गईं। जहां से चलता दोबारा वहां पहुंच जाता, निकलने का रास्ता ही उसको न मिलता। जब कई घन्टे गुज़र गए और चलते चलते थक गया तो उसके दिमाग़ में यह ख़्याल आया कि यह बड़े मियां की कोई करामत मालूम होती है, मैंने उनके पैसे छीने हैं तो अल्लाह तआ़ला ने मेरा रास्ता बन्द कर दिया, अब क्या करूं? उसने सोचा कि अब यही रास्ता है कि उन बुज़ुर्ग के पास दोबारा वापस जाऊं और उनसे दरख़्वास्त करूं कि ख़ुदा के लिए

ये पैसे ले लो और अल्लाह तआला से दुआ करके मेरी जान छुड़ाओ। चुनांचे मियां साहिब के घर के दरवाज़े पर पहुंचा और दस्तक दी, मियां साहिब ने पूछा कि कौन है? उसने कहा कि हुज़ूर! मैंने आपके पैसे छीन लिए थे, मुझ से ग़लती हो गई थी, ख़ुदा के लिए ये पैसे ले लो। मियां साहिब ने फ़रमाया कि मैंने ये पैसे तुम्हारे लिए हलाल कर दिए और तुम्हें हिबा कर चुका, अब ये पैसे मेरे नहीं रहे, मैंने तुम्हें दे दिए, अब मैं वापस नहीं ले सकता। उस चोर ने कहा कि ख़ुदा के लिए ये पैसे वापस ले लो। अब दोनों के दरमियान बहस हो रही है, चोर कहता है कि ख़ुदा के लिए पैसे ले लो। वह कहते हैं कि मैं नहीं लेता, मैं तो हिबा कर चुका। आख़िरकार मियां जी ने पूछा कि क्यों वापस करना चाहते हो? उसने कहा हज़रत! बात यह है कि मैं अपने घर जाना चाहता हूं मगर रास्ता नहीं मिल रहा है, मैं कई घन्टों से इन गलियों में भटक रहा हूं। मियां जी ने फ़रमाया कि अच्छा मैं दुआ कर देता हूं, तुम्हें रास्ता मिल जायेगा। चुनांचे उन्होंने दुआ की और उसको रास्ता मिल गया।

किसी की तरफ़ से "बुग़्ज़" न रखो

बहर हाल! इन अल्लाह वालों को अगर कोई तक्लीफ़ पहुंचाये भी तो ये अल्लाह वाले उसके साथ भी "बुग़्ज़" नहीं रखते, बुग़्ज़ उनकी गली में गुज़रा ही नहीं।

कुफ़्र अस्त दर तरीक़ते मा कीना दाश्तन
आईने मा अस्त सीना चूं आईना दाश्तन

हमारी तरीक़त में किसी शख़्स से "बुग़्ज़" रखना कुफ़्र की तरह है। हमारा क़ानून तो यह है कि हमारा दिल आईने की तरह होता है, उस पर किसी के बुग़्ज़, बैर और दुश्मनी का कोई दाग़ नहीं है।

बदला अल्लाह पर छोड़ दो

इसलिए जो तुम्हें तक्लीफ़ पहुंचाए उसको अल्लाह के लिए माफ़ कर दो, और अगर बदला लेना ही है तो उस बदले को अल्लाह पर छोड़ दो। इसलिए कि अगर ख़ुद बदला लोगे तो उस से लड़ाई झगड़े पैदा होने का अन्देशा है, क्योंकि यह मालूम नहीं होगा कि जितना तुम्हें बदला लेने का हक़ था उतना ही बदला लिया या उस से ज़्यादा बदला ले लिया। इसलिए अगर ज़्यादा बदला ले लिया तो क़ियामत के दिन तुम्हारी गर्दन पकड़ी जायेगी, इसलिए बदला अल्लाह पर छोड़ दो।

हर इन्सान अपने फ़राइज़ को अदा करे

लेकिन यहां एक बात समझ लेनी चाहिए, वह यह कि अल्लाह और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम हमेशा हर इन्सान को उसके फ़राइज़ की तरफ़ तवज्जोह दिलाते हैं कि तुम्हारा फ़रीज़ा यह है, तुम्हारा यह काम होना चाहिए, तुम्हारा काम का तरीक़ा यह होना चाहिए। इसलिए जिस शख़्स को तक्लीफ़ पहुंची है उसको तो आप सब्र करने की तल्क़ीन फ़रमा रहे हैं कि तुम सब्र करो और माफ़ कर दो, बदला न लो, उस से बुग़्ज़ और दुश्मनी न रखो,

और उस तक्लीफ़ को झगड़े और फूट का ज़रिया न बनाओ। लेकिन दूसरी तरफ़ हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने तक्लीफ़ पहुंचाने वाले को दूसरे अन्दाज़ से ख़िताब फ़रमाया ताकि लोग यह न समझें कि जब हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम जिस शख़्स को तक्लीफ़ पहुंची है उसको सब्र की तल्क़ीन फ़रमा रहे हैं तो फिर तक्लीफ़ पहुंचाने में कोई हर्ज नहीं, ऐसा नहीं।

दूसरों को तक्लीफ़ मत दो

बल्कि तक्लीफ़ पहुंचाने वाले के बारे में अल्लाह तआ़ला का तो यह फ़रमान है कि किसी भी इन्सान को अगर तुम्हारी ज़ात से कोई तक्लीफ़ पहुंची तो मैं उस वक़्त तक माफ़ नहीं करूंगा जब तक वह बन्दा माफ़ न कर दे, या तुम उसके हक़ की तलाफ़ी न कर दो। इसलिए किसी भी इन्सान को तक्लीफ़ पहुंचाने से बचो, किसी भी क़ीमत पर ऐसा इक़दाम न करो जिस से दूसरे को तक्लीफ़ पहुंचे।

चीफ़ जस्टिस का रोज़ाना दो सौ रक्अ़त नफ़िल पढ़ना

हज़रत इमाम अबू यूसुफ़ रह्मतुल्लाहि अ़लैहि जो इमाम अबू हनीफ़ा रह्मतुल्लाहि अ़लैहि के शागिर्द हैं, लेकिन अल्लाह के वली होने की हैसियत से मशहूर नहीं हैं, लेकिन उनके वाक़िआत में लिखा है कि जब "क़ाज़ियुल क़ुज़ात" (चीफ़ जस्टिस) बन गए, तो उसके बाद अपनी तमाम मश्ग़ूलियत के बावजूद दिन भर में दो सौ रक्अ़त नफ़िल

पढ़ा करते थे। जब उनकी वफ़ात का वक़्त क़रीब आया तो किसी ने देखा कि उनके चेहरे पर फ़िक्र और चिन्ता के आसार हैं। उनसे पूछा कि आपको किस चीज़ की फ़िक्र और चिन्ता है? फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला की बारगाह में हाज़िर होने का वक़्त क़रीब आ रहा है, अल्लाह तआ़ला के सामने हाज़िर होना है, वहां पर अपनी ज़िन्दगी के आमाल का क्या जवाब दूंगा। और तमाम वाक़िआत के बारे में मुझे याद है कि मैं उनसे तौबा कर चुका हूं और इस्तिग़फ़ार कर चुका हूं। अल्लाह तआ़ला की ज़ात से उम्मीद है कि अल्लाह तआ़ला माफ़ फ़रमा देंगे।

यह ना इन्साफ़ी मुझ से हो गई

लेकिन एक वाक़िआ ऐसा याद आ रहा है जिसकी वजह से मुझे बहुत सख़्त तश्वीश है। वह वाक़िआ यह है कि जिस वक़्त "क़ाज़ी" के ओ़हदे पर था, और लोगों के दरमियान फ़ैसले किया करता था, उस दौरान एक बार एक मुसलमान और एक ग़ैर मुस्लिम का मुक़द्दमा मेरे पास आया, मैंने मुक़द्दमा सुनते वक़्त मुसलमान को तो अच्छी जगह पर बिठाया और ग़ैर मुस्लिम को उस से कमतर जगह पर बिठाया, हालांकि शरीअ़त का हुक्म यह है कि जब तुम्हारे पास मुक़द्दमे के दो फ़रीक़ आएं तो उनके दरमियान मज्लिस भी बराबर होनी चाहिए। जिस जगह पर मुद्दई (दावा दायर करने वाले) को बिठाया है उसी जगह पर 'मुद्दआ़ अ़लैहि' (जिस पर दावा किया गया है) को भी बिठाओ। ऐसा न हो कि दोनों के दरमियान बिठाने के

अन्दर फ़र्क़ करके ना इन्साफ़ी की जाए। मुझ से यह ना इन्साफ़ी हो गई, अगरचे मैंने फ़ैसला तो हक़ के मुताबिक़ किया, अल्हमदु लिल्लाह, लेकिन बिठाने की तरतीब में शरीअ़त का जो हुक्म है उसमें रियायत न रह सकी। मुझे इसकी तश्वीश हो रही है कि अगर उसके बारे में अल्लाह तआ़ला ने मुझ से पूछ लिया तो क्या जवाब दूंगा, क्योंकि यह ऐसी चीज़ है जो कि तौबा से माफ़ नहीं हो सकती जब तक कि हक़ वाला माफ़ न करे।

असली मुसलमान कौन?

इसलिए सिर्फ़ मुसलमान ही नहीं, ग़ैर मुस्लिमों के भी शरीअ़त ने हुक़ूक़ बताए हैं, यहां तक कि जानवरों के भी हुक़ूक़ शरीअ़त ने बयान किए हैं। हदीसों में कई वाक़िए आए हैं जिस से मालूम होता है कि जानवरों के साथ ज़्यादती करने के नतीजे में लोगों पर कैसे कैसे अ़ज़ाब आए। बहर हाल! एक तरफ़ तो यह कहा जा रहा है कि ख़बरदार! अपनी एक एक हर्कत में और अपने एक एक अन्दाज़ व अदा में इस बात का ख़्याल रखो कि तुम्हारी ज़ात से दूसरे को मामूली सी भी तक्लीफ़ न पहुंचे। एक हदीस में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का इर्शाद है:

المسلم من سلم المسلمون من لسانه و يده (بخاری شریف)

"मुसलमान वही है जिसके हाथ और ज़बान से दूसरे मुसलमान महफ़ूज़ रहें"। उसकी ज़ात से दूसरे को तक्लीफ़ न पहुंचे।

यह इतनी ख़तरनाक चीज़ है कि इसकी माफ़ी का कोई रास्ता नहीं, सिवाए इसके कि हक़ वाला माफ़ करे। इसलिए एक तरफ़ तो हर एक इन्सान को यह तंबीह कर दी कि तुम्हारी ज़ात से दूसरे को तक्लीफ़ नहीं पहुंचनी चाहिए, और दूसरी तरफ़ यह कह दिया कि अगर तुम्हें दूसरे से तक्लीफ़ पहुंचे तो उस पर सब्र करो और उसको माफ़ कर दो। उसकी वजह से उस से बुग़्ज़ और दुश्मनी न रखो, और उसको फूट और बिखराव का ज़रिया न बनाओ। यह वह तालीम है जो नबी–ए–करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने तल्क़ीन फ़रमाई।

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की तरबियत का अन्दाज़

हदीस शरीफ़ में आता है कि जिस वक़्त हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने दस हज़ार सहाबा–ए–किराम के साथ मक्का मुकर्रमा फ़तह फ़रमा लिया, उन सहाबा में मुहाजिरीन भी थे और अन्सार भी थे। फिर मक्का के फ़तह होने के बाद हुनैन की जंग पेश आई, वहां भी अल्लाह तआ़ला ने आख़िरकार फ़तह अ़ता फ़रमाई। इस पूरे सफ़र में बड़ी मिक़दार (मात्रा) में माले ग़नीमत मुसलमानों के हाथ में आया, उस ज़माने में गाय, बैल, बकरी की शक्ल में माल होता था। चुनांचे जिसके पास जितने ज़्यादा जानवर होते उतना ही बड़ा मालदार समझा जाता था। तो माले गनीमत के अन्दर बड़ी मिक़दार में

जानवर मुसलमानों के हाथ आए।

नये मुसलमानों के दरमियान ग़नीमत के माल की तक़सीम

जब माले ग़नीमत की तक़सीम का वक़्त आया तो हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने यह महसूस फ़रमाया कि वे लोग जो मक्का मुकर्रमा के आस पास रहने वाले हैं, ये अभी ताज़ा मुसलमान हुए हैं, अभी इस्लाम उनके दिलों के अन्दर पूरी तरह जमा नहीं, और उनमें से बाज़ तो ऐसे हैं कि अभी मुसलमान भी नहीं हुए बल्कि इस्लाम की तरफ़ थोड़ा सा झुकाव हुआ है, इसलिए आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने यह महसूस किया कि अगर उनके साथ अच्छा सुलूक किया जायेगा तो जो लोग ताज़ा ताज़ा मुसलमान हुए हैं वे इस्लाम पर पुख़्ता हो जायेंगे, और जो लोग इस्लाम की तरफ़ माईल हुए हैं वे भी उसके नतीजे में मुसलमान हो जायेंगे। फिर ये लोग मुसलमानों के ख़िलाफ़ साज़िश नहीं करेंगे, इसलिए जितना माले ग़नीमत आया था हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने वह सारा का सारा माल वहां के लोगों के दरमियान तक़सीम फ़रमा दिया।

मुनाफ़िक़ों का काम लड़ाई कराना

उस वक़्त कोई मुनाफ़िक़ अन्सार सहाबा के पास चला गया और उनसे जाकर कहा कि देखो तुम्हारे साथ कैसा सुलूक हो रहा है, लड़ने के लिए मदीना मुनव्वरा से तुम

चलकर आए, और हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का साथ तुमने दिया, और हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के साथ जिहाद करके तुमने अपनी जानें दीं, लेकिन माले ग़नीमत उन लोगों में तक़सीम हो गया जो अभी अभी मुसलमान हुए हैं, और जिनके ख़िलाफ़ तुम्हारी तलवारें चल रही थीं, और जिनके ख़ून से तुम्हारी तलवारें अब भी भरी हुई हैं, और तुम्हें माले ग़नीमत में से कुछ न मिला। चूंकि मुनाफ़िक़ लोग हर जगह होते थे, उनमें से किसी ने सहाबा के दरमियान लड़ाई कराने के लिए यह बात छेड़ी थी। अब अन्सार सहाबा में जो बड़ी उम्र के और तजुर्बेक़ार हज़रात थे, उनके दिलों में कोई ख़्याल पैदा नहीं हुआ, वे जानते थे कि इस माल व दौलत की हकीक़त क्या है?

लेकिन अन्सार सहाबा में जो नौजवान थे, उनके दिल में यह ख़्याल पैदा होने लगा कि यह अ़जीब मामला हुआ कि सारा माले ग़नीमत उन्हीं में तक़सीम हो गया और हम लोग जो जिहाद में शरीक थे, हमें कुछ न मिला।

आपका हकीमाना ख़िताब

हुज़ूरे अक़्दस नबी–ए–करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को यह इत्तिला मिली कि बाज़ अन्सार सहाबा को यह ख़्याल हो रहा है। चुनांचे आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने ऐलान फ़रमाया कि तमाम अन्सार सहाबा को एक जगह जमा किया जाए। जब सब जमा हो गए तो आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने अन्सार सहाबा रज़ियल्लाहु

अ़न्हुम से ख़िताब करते हुए फ़रमाया:

ऐ गिरोहे अन्सार! तुम्हें अल्लाह तआ़ला ने ईमान की दौलत अ़ता फ़रमाई, तुम्हें अल्लाह तआ़ला ने नबी की मेज़बानी का शर्फ़ अ़ता फ़रमाया, और मैंने यह ग़नीमत का माल उन लोगों में बांट दिया जो यहां के रहने वाले हैं ताकि ये ईमान पर पुख़्ता और मज़बूत हो जाएं, और कितनी बार ऐसा होता है कि मैं जिसको माले ग़नीमत नहीं देता हूं वह ज़्यादा मुअ़ज़्ज़ज़ (यानी सम्मानित) और महबूब होता है उसके मुक़ाबले में जिसको मैं माले ग़नीमत देता हूं। लेकिन मैंने सुना है कि बाज़ लोगों के दिलों में इस क़िस्म का ख़्याल पैदा हुआ है। फिर फ़रमाया: ऐ गिरोहे अन्सार! क्या तुम इस बात पर राज़ी नहीं हो कि जब ये लोग अपने घरों को वापस जायें तो उनके साथ गाय, बैल बकरियां हों, और जब तुम अपने घरों की तरफ़ वापस जाओ तो तुम्हारे साथ मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम हों, बताओ इनमें से कौन अफ़ज़ल है?

जिस वक़्त हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने यह बात इर्शाद फ़रमाई, उस वक़्त तमाम लोगों के दिलों में ठन्डक पड़ गई। अन्सारी सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम ने फ़रमाया कि ऐ अल्लाह के रसूल! सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम, हमारे लिए तो इस से बड़ा ऐज़ाज़ कोई नहीं है, यह बात सिर्फ़ चन्द नौजवानों ने कह दी थी वर्ना हमारे जो बड़े हैं उनमें से किसी के दिल में कोई ख़्याल पैदा नहीं हुआ। आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम जैसा फ़ैसला

फ़रमाएं, आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ही का फ़ैसला बरहक़ है।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के ज़्यादा ख़ास कौन थे?

जब यह सारा क़िस्सा ख़त्म हो गया तो उसके बाद फिर अन्सारी सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम से हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने ख़िताब करते हुए फ़रमायाः

ऐ अन्सार ख़ूब सुन लो! तुम मेरे ख़ासुल ख़ास लोग होः

لَوْسَلَكَ النَّاسُ وَادِيًا لَسَلَكْتُ شِعْبَ الْاَنْصَارِ.

अगर लोग एक रास्ते पर जाएं और अन्सार दूसरे रास्ते पर जाएं तो मैं अन्सार वाला रास्ता इख़्तियार करूंगा।

अन्सार सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम को सब्र करने की वसीयत

फिर आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमायाः

ऐ अन्सार! अभी तक तो तुम्हारे साथ ना इन्साफ़ी नहीं हुई, और मुझे तुम्हारे साथ जो मुहब्बत और ताल्लुक़ है वह इन्शा अल्लाह बरक़रार रहेगा, लेकिन मैं तुम्हें पहले से बता देता हूं कि मेरे दुनिया से उठ जाने के बाद तुम्हें इस बात से वास्ता पेश आयेगा कि तुम्हारे मुक़ाबले में दूसरों को ज़्यादा तरजीह दी जायेगी। यानी जो अमीर और हाकिम लोग बाद में आने वाले हैं, वे तुम्हारे साथ इतना अच्छा सुलूक नहीं करेंगे, जितना अच्छा सुलूक मुहाजिरों और दूसरों के साथ करेंगे।

ऐ गिरोहे अन्सार! मैं तुम्हें वसीयत करता हूं कि अगर तुम्हारे साथ ऐसा सुलूक हो तो:

فَاصْبِرُوْا حَتّٰى تَلْقَوْنِىْ عَلَى الْحَوْضِ۔

उस वक़्त तुम सब्र करना यहां तक कि हौज़े कौसर पर तुम मुझ से आ मिलो।

इस इर्शाद में आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने पहले से यह बता दिया कि आज तो तुम्हारे साथ ना इन्साफ़ी नहीं हुई, लेकिन आगे तुम्हारे साथ ना इन्साफ़ी होगी और तुम्हें वसीयत करता हूं कि उस ना इन्साफ़ी के मौक़े पर सब्र करना।

अन्सार सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम का इस वसीयत पर अ़मल

आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने उन अन्सार सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम से यह नहीं फ़रमाया कि उस मौक़े पर अन्सार के हुक़ूक़ की सुरक्षा के लिए एक समिति बना लेना, फिर अपने हुक़ूक़ तलब करने के लिए झन्डा लेकर खड़े हो जाना और बग़ावत का झण्डा बुलन्द कर देना। बल्कि यह फ़रमाया कि उस वक़्त तुम सब्र करना यहां तक कि तुम मुझ से हौज़े कौसर पर आकर मिल जाओ। चुनांचे अन्सार सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम ने भी हुज़ूरे पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के इस हुक्म पर ऐसा अ़मल करके दिखाया कि पूरी इस्लामी तारीख़ में अ़न्सार की तरफ़ से कोई लड़ाई और झगड़ा आपको नहीं

मिलेगा। सहाबा–ए–किराम रज़ियल्लाहु अ़न्हुम के दरमियान इख़्तिलाफ़ात हुए और उसके नतीजे में जंगे जुमल और जंगे सिफ़्फ़ीन भी हुई, लेकिन अन्सार सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम की तरफ़ से अमीरों और हाकिमों के ख़िलाफ़ कोई बात पेश नहीं आई।

अन्सार के हुकूक़ का ख़्याल रखना

एक तरफ़ तो हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने अन्सार सहाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम को यह वसीयत फ़रमाई, दूसरी तरफ़ हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने अपनी वफ़ात की बीमारी में जब आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम मस्जिदे नबवी में नमाज़ के लिए भी तश्रीफ़ नहीं ला रहे थे, उस वक़्त लोगों को जो वसीयतें फ़रमाईं, उन वसीयतों में एक यह थी कि ये अन्सार सहाबा, इन्होंने मेरी मदद की है और इन्होंने क़दम क़दम पर ईमान का मुज़ाहरा किया है, इसलिए इनके हुकूक़ का ख़्याल रखना। ऐसा न हो कि इन अन्सार के दिल में ना इन्साफ़ी का ख़्याल पैदा हो जाए। इसलिए एक तरफ़ तो सहाबा–ए–किराम को आपने यह तल्क़ीन फ़रमाई कि इन अन्सार के हुकूक़ का ख़्याल रखना, और दूसरी तरफ़ अन्सार को यह तल्क़ीन की कि अगर कभी तुम्हारे साथ ना इन्साफ़ी हो तो सब्र का मामला करना।

हर शख़्स अपने हुकूक़ पूरे करे

इसलिए हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की

तालीम और तल्क़ीन यह है कि हर शख़्स अपने फ़रीज़े को देखे कि मेरे ज़िम्मे क्या फ़रीज़ा आ़यद होता है? मुझ से क्या मुतालबा है? और मैं उस फ़रीज़े को और उस मुतालबे को पूरा कर रहा हूं या नहीं? और जब हर इन्सान को यह धुन लग जाती है कि मैं अपना फ़रीज़ा सही तौर पर अदा करूं और मेरे ज़िम्मे अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से जो मुतालबा है वह पूरा करूं तो उस सूरत में सब के हुक़ूक़ अदा हो जाते हैं।

आज हर शख़्स अपने हुक़ूक़ का मुतालबा कर रहा है

आज दुनिया में उल्टी गंगा बह रही है। और आज यह सबक़ क़ौम को पढ़ाया जा रहा है कि हर शख़्स अपने हुक़ूक़ का मुतालबा करने के लिए झण्डा लेकर खड़ा हो जाए कि मुझे मेरे हुक़ूक़ मिलने चाहिएं। उसके नतीजे में वह इस बात से बेपरवाह है कि मेरे ज़िम्मे क्या फ़राइज़ और हुक़ूक़ आ़यद होते हैं? मुझ से क्या मुतालबे हैं? मज़दूर यह नारा लगा रहा है कि मेरे हुक़ूक़ मुझे मिलने चाहिएं। काम पर लगाने वाला कह रहा है कि मुझे मेरे हुक़ूक़ मिलने चाहिएं, लेकिन न मज़दूर को अपने फ़राइज़ की परवाह है और न काम पर लगाने वाले को अपने फ़राइज़ की परवाह है। आज मज़दूर को यह हदीस तो ख़ूब याद है कि मज़दूर की मज़दूरी पसीना सूखने से पहले अदा कर दो, लेकिन इसकी फ़िक्र नहीं कि जो काम उसने किया है उसमें पसीना

भी निकला या नहीं? उसको इसकी फ़िक्र नहीं कि मैंने जो काम किया है वह हक़ीक़त में इस लायक़ है कि उस पर मज़दूरी दी जाए?

हर इन्सान अपना जायज़ा ले

इसलिए हर इन्सान अपना जायज़ा ले, अपने गिरेबान में मुंह डाल कर देखे कि मैं जो काम कर रहा हूं, वह दुरुस्त है या नहीं? अगर एक शख़्स दफ़्तर में काम कर रहा है, उसको इसकी फ़िक्र तो होती है कि मेरी तन्ख़्वाह बढ़नी चाहिए, मेरा फ़लां ग्रेड होना चाहिए, मुझे इतनी तरक़्क़ियां मिलनी चाहिएं, लेकिन क्या उस मुलाज़िम ने कभी यह भी सोचा कि दफ़्तर के अन्दर जो फ़राइज़ मेरे ज़िम्मे आ़यद हैं, वे फ़राइज़ में ठीक तरीक़े पर अदा कर रहा हूं या नहीं? इसका नतीजा यह है कि आज लोगों के हुक़ूक़ ज़ाया हो रहे हैं। आज किसी को अपना हक़ नहीं मिल रहा है, जब कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का तरीक़ा है कि हर एक को उसके फ़राइज़ से ख़बरदार फ़रमाते हैं कि तुम्हारा यह फ़रीज़ा है, इसलिए तुम अपने इस फ़रीज़े को अदा करो। सिर्फ़ यही तरीक़ा है जो समाज को सुधार की तरफ़ ला सकता है।

ख़ुलासा

बहर हाल! हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इस हदीस में इर्शाद फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला से ज़्यादा बर्दाश्त करने वाला और बुर्दबार कोई नहीं है।

अल्लाह तआ़ला लोगों की ना फ़रमानियां और उनके कुफ़्र व शिर्क को देख रहे हैं, लेकिन फिर भी सब्र करते हैं और उनको आ़फ़ियत और रिज़्क़ देते हैं। इसलिए तुम भी अल्लाह तआ़ला के इस अख़्लाक़ को अपने अन्दर पैदा करो और इस पर अ़मल करने की कोशिश करो। अल्लाह तआ़ला हम सब को इन बातों पर अ़मल करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए, आमीन।

واٰخردعوانا ان الحمد لله رب العالمين